विचार बिन्दु

दूसरों के अनुभव से होशियारी सीखने की मनुष्य को इच्छा नहीं होती, उसको स्वतंत्र ठोकरें चाहिए। –विनोबा

राजस्थान में सड़क हादसों का बढ़ता प्रकोप और सरकार की सशक्त पहल

राजस्थान की विस्तृत सड़के, जो कभी पर्यटकों और यात्रियों के लिए आकर्षण का केंद्र रही हैं, आजकल मौत का पर्याय बन चुकी हैं। सुनसान राजमार्गों पर दौड़ते वाहन अब परिवारों को छीन ले जाते हैं। पिछले कुछ वर्षों से सड़क हादसों की संख्या में लगातार वृद्धि हो रही है। 2025 में यह चरम पर पहुंच गई, जब राज्य पुलिस के आंकड़ों के अनुसार करीब 22,000 सड़क दुर्घटनाएं दर्ज हुईं, जिनमें 12,000 से अधिक लोगों की मौत हो गई। यह संख्या पिछले पांच वर्षों के औसत से 15–20 प्रतिशत अधिक है। ये केवल आंकड़े नहीं, बल्कि हजारों परिवारों की बिखरती हुई दुनिया का प्रतिबिंब हैं। तेज रफ्तार, लापरवाही, खराब सड़कें और शराब का सेवन जैसे कारक इन हादसों को बढ़ावा दे रहे हैं। लेकिन राजस्थान सरकार ने इन चुनौतियों का डटकर मुकाबला करने के लिए सशक्त और बहुआयामी उपाय अपनाए हैं, जो उल्लेखनीय सफलता की ओर अग्रसर हैं। इस आलेख में हम सड़क हादसों के बढ़ते आंकड़ों, प्रभावित परिवारों की पीड़ा और सरकारी प्रयासों की सकारात्मक पड़ताल करेंगे।

राजस्थान में सड़क हादसों की समस्या नई नहीं है, लेकिन हाल के वर्षों में यह महामारी की तरह फैल गई है। 2021 से 2024 तक औसतन प्रति वर्ष 18,000 से 20,000 हादसे दर्ज हुए थे, जबकि 2025 में यह आंकड़ा 22,500 तक पहुंच गया। राष्ट्रीय अपराध रिकॉर्ड ब्यूरो (एनसीआरबी) की रिपोर्ट बताती है कि राजस्थान देश के उन राज्यों में शामिल है, जहां सड़क हादसों से होने वाली मौतों का अनुपात जनसंख्या के हिसाब से सबसे अधिक है। जयपुर, जोधपुर, उदयपुर और कोटा जैसे बड़े शहरों के अलावा ग्रामीण इलाकों में भी हादसे बढ़े हैं। हर दिन औसतन 30–35 मौतें हो रही हैं, जो राज्य की प्रगति को झकझोर रही हैं।

मुख्य कारणों में वाहनों की तेज गति प्रमुख है। राज्य में नेशनल हाईवे की कुल लंबाई 8,000 किलोमीटर से अधिक है, जो दिल्ली–मुंबई एक्सप्रेसवे और अन्य राजमार्गों से जुड़ी हैं। इन पर ट्रक, बसें और निजी वाहन अत्यधिक रफ्तार से दौड़ते हैं। दूसरा बड़ा कारण सड़कों की खराब स्थिति और मानवीय लापरवाही है। राजस्थान का अधिकांश हिस्सा रेगिस्तानी इलाका है, जहां मौसम की मार से सड़कें टूट–फूट जाती हैं। ग्रामीण क्षेत्रों में ट्रैक्टर–ट्रॉली और बाइक दुर्घटनाएं आम हैं। महामारी के बाद वाहनों की संख्या में 25 प्रतिशत वृद्धि हुई, जिसने यातायात दबाव को बढ़ा दिया। शराब का सेवन, बिना हेलमेट या सीट बेल्ट के यात्रा तथा ओवरलोडेड वाहन भी प्रमुख कारक हैं। इनके चलते न केवल जानें जा रही हैं, बल्कि अर्थव्यवस्था को भी अरबों का नुकसान हो रहा है।

इन आंकड़ों के पीछे छिपी है परिवारों की अनकही व्यथा, जो किसी उपन्यास से कम नहीं। जयपुर के निकटवर्ती गांव में रहने वाले रामलाल की कहानी इसका जीता–जागता उदाहरण है। पिछले साल उनकी इकलौती बेटी मीरा, जो मात्र 22 वर्ष की थी, जयपुर से सिरोही लौटते हुए बस दुर्घटना में मारी गई। मीरा एक नर्स थी, जो परिवार का सहारा बनी हुई थी। हादसे के बाद रामलाल का परिवार टूट गया। पत्नी सदमा सहन न कर सकी और कुछ ही महीनों में चल बसी। रामलाल बताते हैं, ''एक पल में सब कुछ छिन गया। अब मजदूरी करके गुजारा हो रहा है।'' ऐसी हजारों कहानियां राज्य भर में बिखरी पड़ी हैं।

उदयपुर जिले का एक और मार्मिक उदाहरण है। 2025 की दीवाली पर पिता–पुत्र जोधपुर से बाइक पर लौट रहे थे। सामने आ रहे ट्रक ने दोनों को कुचल दिया। मां और दो बेटियां अब अनाथ–सी हो गईं। एक सर्वे के अनुसार, प्रत्येक हादसे से औसतन चार–पांच लोग अप्रत्यक्ष रूप से प्रभावित होते हैं। आर्थिक संकट, भावनात्मक आघात और सामाजिक अलगाव इन परिवारों को वर्षों तक जकड़े रहता है। मनोवैज्ञानिक रूप से ये हादसे विनाशकारी हैं, जिससे अवसाद और आत्महत्या के मामले भी बढ़ रहे हैं। सरकार इन परिवारों के लिए त्वरित मुआवजा और कौशल प्रशिक्षण प्रदान कर रही है, लेकिन घाव इतने गहरे हैं कि पूर्ण उपचार कठिन है।

राजस्थान में सड़क हादसे परिवारों के लिए त्रासदी हैं, लेकिन सरकार की सकारात्मक और सक्रिय पहल आशा की किरण है। निरंतर प्रयासों से यह सिलसिला थमेगा। जनता का सहयोग मिले जैसे सुरक्षित ड्राइविंग का संकल्प, जागरूकता प्रसार और नियमों का पालन तो सुरक्षित राजस्थान का सपना साकार होगा। 2026 के लिए ड्रोन निगरानी और स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम की योजना है, जो हादसों को 30 प्रतिशत कम करने का लक्ष्य रखती है।

सड़क सुरक्षा के क्षेत्र में कई चुनौतियां बरकरार हैं। रोड सेफ्टी फाउंडेशन जैसी संस्थाएं सरकार के साथ मिलकर हेलमेट वितरण और जागरूकता रैलियां आयोजित कर रही हैं, लेकिन युवाओं को लक्षित अभियान की कमी है। सोशल मीडिया पर वीडियो कैंपेन चलाए जा सकते हैं। सख्त कानून लागू हों, जैसे ड्राइविंग लाइसेंस के लिए अनिवार्य ट्रेनिंग। सड़क डिजाइन में मानवीय त्रुटि को ध्यान में रखा जाए। राज्य सरकार ने केंद्रीय सड़क कोष से 2,000 करोड़ रुपये लिए, लेकिन व्यय में पारदर्शिता की कमी रही। शराबबंदी अभियान चला, किंतु रात के समय चेकिंग कमजोर है। ट्रैफिक पुलिस की संख्या अपर्याप्त है, प्रति लाख वाहनों पर मात्र 10 पुलिसकर्मी। ग्रामीण सड़कों पर तो कोई निगरानी ही नहीं। हाल में परिवहन मंत्री ने घोषणा की कि 2026 में ड्रोन से निगरानी और एआई आधारित सिस्टम लगाया जाएगा। लेकिन बिना जनभागीदारी के ये प्रयास अधूरे रहेंगे।

राजस्थान सरकार ने सड़क सुरक्षा को प्राथमिकता देते हुए अभूतपूर्व कदम उठाए हैं, जो सकारात्मक परिणाम दे रहे हैं। 2023 में लॉन्च की गई राजस्थान रोड सेफ्टी पॉलिसी 2023–2030 एक मील का पत्थर साबित हुई। इस नीति के तहत 5,000 से अधिक एआई–संचालित स्पीड कैमरे लगाए गए, जिनसे 2025 में 50 लाख से अधिक ई–चालान जारी हुए। इससे तेज रफ्तार में 20 प्रतिशत कमी आई। मुख्यमंत्री की सुरक्षित राजस्थान अभियान ने 10 लाख से अधिक युवाओं को ट्रेनिंग दी, जिसमें हेलमेट, सीट बेल्ट और सुरक्षित ड्राइविंग सिखाई गई। स्कूलों–कॉलेजों में अनिवार्य सत्र चलाए गए, जिससे नई पीढ़ी में जागरूकता बढ़ी।

बुनियादी ढांचे में भारी निवेश हुआ है। केंद्रीय सड़क कोष से 2,500 करोड़ रुपये लेकर 300 से अधिक ब्लैक स्पॉट्स को समाप्त किया गया। जयपुर–अजमेर और जयपुर–आगरा हाईवे पर फ्लाईओवर और डिवाइडर बनाए गए, जिससे हादसों में 25 प्रतिशत गिरावट दर्ज हुई। ग्रामीण सड़कों के लिए प्रधानमंत्री ग्राम सड़क योजना के तहत 5,000 किलोमीटर सड़कें पुनर्निर्मित हुईं। शराबबंदी के लिए नो टॉलरेंस पॉलिसी अपनाई गई रात 10 बजे के बाद विशेष चेकिंग दस्तों ने 40,000 से अधिक वाहन पकड़े। परिवहन विभाग ने ड्राइवर ट्रेनिंग सेंटर खोले, जहां 2 लाख ड्राइवरों को प्रमाणित किया गया।

2026 के लिए ड्रोन निगरानी और स्मार्ट ट्रैफिक सिस्टम की योजना है, जो हादसों को 30 प्रतिशत कम करने का लक्ष्य रखती है। एनजीओ के साथ साझेदारी में जागरूकता रैलियां और सोशल मीडिया कैंपेन चले, जिन्हें करोड़ों लोगों ने देखा। मुआवजा योजना को मजबूत किया गया अब 5 लाख तक तत्काल सहायता मिलती है, साथ ही परिवारों के लिए कौशल प्रशिक्षण। ये प्रयास न केवल हादसों को रोक रहे हैं, बल्कि राजस्थान को सुरक्षित राज्य बनाने की दिशा में मजबूत कदम हैं। 2025 की दूसरी छमाही में हादसों में 10 प्रतिशत कमी इसका प्रमाण है।

राजस्थान में सड़क हादसे परिवारों के लिए त्रासदी हैं, लेकिन सरकार की सकारात्मक और सक्रिय पहल आशा की किरण है। निरंतर प्रयासों से यह सिलसिला थमेगा। जनता का सहयोग मिले जैसे सुरक्षित ड्राइविंग का संकल्प, जागरूकता प्रसार और नियमों का पालन तो सुरक्षित राजस्थान का सपना साकार होगा। आइए, हम सब मिलकर इस दिशा में कदम बढ़ाएं।

–अतिथि संपादक,
अविनाश जोशी,
वरिष्ठ पत्रकार एवं कॉरपोरेट सलाहकार

संविधान और संविधान सभा में भारतीय विरासत

सूर्य प्रताप सिंह राजावत

संविधान सभा में बहस के समय वेद, पुराण, उपनिषद, रामायण, महाभारत, स्मृतियों, शंकराचार्य, तुलसीदास, सूरदास, स्वामी विवेकानंद, महर्षि अरविंद, आदि का स्मरण किया गया था। स्वतंत्रता, समानता, बंधुत्व, न्याय शब्द भाषा की दृष्टि से नए हो सकते हैं परन्तु भारतीय परंपरा और राजनीती में न्याय, समानता, स्वतंत्रता, बंधुत्व का उल्लेख मिलता है। संविधान सभा की चर्चा इस पक्ष को समझने में सार्थक है। उद्देश्य संकल्प से लेकर अंतिम वाचन तक स्पष्ट होता है कि भारतीय विधि शास्त्र, शासन के सिद्धांत समृद्ध है , युगधर्म के अनुसार संस्थाओं का निर्माण वैदिक ज्ञान –आ नो भद्राः क्रतवो यन्तु विश्वतः के अनुसार ही किया है। गणतंत्र के 76 वर्ष को ईमानदारी से समझने के लिए संविधान सभा की डिबेट्स का अध्यन अपरिहार्य है। जिससे हम भारत के लोग समझ सके कि संविधान सभा की अभीप्सा, लक्ष्य और भावना को संविधान ने कितना सहयोग दिया है और नागरिको की कितनी सार्थक भागीदारी रही। कुछ निम्नलिखित उदाहरणों से प्रयास है संविधान, और संविधान सभा में भारतीय विरासत को समझने का –

20 जनवरी 1947 (उद्देश्य संकल्प –प्राचीन भारत में गणतंत्र व्यवस्था) डॉ. राधा कृष्णन – ''जब उत्तर से कुछ व्यापारी दक्षिण की ओर गए, तो दक्कन के राजकुमारों में से एक ने सवाल पूछा। ''आपका राजा कौन है?'' जवाब था, ''हममें से कुछ सभाओं द्वारा शासित होते हैं, कुछ राजाओं द्वारा।'' केसीड देसो गणाधिना केसीड राजाधीना।

पाणिनि, मेगस्थनीज और कौटिल्य प्राचीन भारत के गणराज्यों का उल्लेख करते हैं। महान बुद्ध कपिलवस्तु गणराज्य के थे। लोगों की संप्रभुता के बारे में बहुत कुछ कहा गया है। हमने माना है कि अंतिम संप्रभुता नैतिक कानून, मानवता की अंतरात्मा पर निर्भर है। प्रजा और राजा दोनों उसके अधीन हैं। धर्म, राजाओं का राजा है।धर्मं क्षात्रस्य क्षत्रम्।यह जनता और स्वयं शासक दोनों का शासक है। यह कानून की संप्रभुता है जिसका हमने दावा किया है।''

21 जनवरी1947 (उद्देश्य संकल्प) श्री आर.वी. धुलेकर –एक हजार साल पहले, भारत, किसी कारण से, विकेन्द्रीकृत या विभाजित और विदेशियों के आक्रमणों का सामना करने में असफल रहने पर वे उनके प्रभुत्व में आ गए। उसी समय से भारतीय जनता के हृदय में स्वतन्त्रता की अग्नि निरन्तर धधक रही है। यह कभी ख़त्म नहीं हुआ. एक ओर यह अग्नि ऋषियों के रूप में प्रकट हुई। स्वामी रामदास, गोस्वामी तुलसीदास, गुरु नानक, स्वामी दयानंद, राम कृष्ण परमहंस, स्वामी विवेकानन्द और राम तीरथ इसी अग्नि के प्रतीक हैं। दूसरी ओर, शिवाजी, गुरु गोविंद सिंह, राणा जैसे राजनेता और राजनेता झाँसी की प्रताप रानी, रानी लक्ष्मी बाई, राजा राम मोहन राय, लोकमान्य तिलक, मोतीलाल नेहरू और सुभाष चन्द्र बोस भी इसी अग्नि के राजनीतिक प्रतीक थे।महात्मा गांधी और खान अब्दुल गफ्फार खान दोनों संत और राजनीतिज्ञ हैं। बाबर, हुमायूं और अकबर पर भारतीयों का उस हद तक स्वागत था, जिस हद तक वे खुद को भारत से जोड़ते थे। भारत में ब्रिटिश शासन के दौरान एक भी दिन ऐसा नहीं बीता जब किसी भारतीय को आजादी के उत्साह के लिए जेल में यातनाएं न दी गई हों। आज़ादी की लड़ाई पिछले दो सौ वर्षों से लगातार चल रही है। ... 1940–52 के राष्ट्रीय आन्दोलन तथा हाल के महायुद्ध से उत्पन्न अन्तर्राष्ट्रीय परिस्थिति ने इंग्लैण्ड को भारत छोड़ने के लिये बाध्य कर दिया। यह संविधान सभा उस शक्ति का प्रतिनिधित्व करती है जो अंग्रेजों से जबरन छीनी गई है। यह उनका उपहार नहीं है।

28अगस्त 1947 (अनुसूचित जातियां) श्री उपेन्द्र नाथ बर्मन –''मैं निवेदन करता हूं कि हम, अनुसूचित जातियां, न केवल बाहर से बल्कि कांग्रेस के सदस्य के रूप में इस संविधान–निर्माण में पूरे दिल से शामिल हुए हैं, क्योंकि हम जानते हैं कि हमारी निर्भरता की इस अवधि के दौरान हमारी जो भी कमियां रही हों, चाहे जो भी अपराध हमने किये हों। हमारे दुर्भाग्यपूर्ण समय के दौरान, हमारे बीच, विशेष रूप से बंगाल में, स्वामी विवेकानन्द और रवीन्द्रनाथ टैगोर जैसे पुरुष पैदा हुए थे, जिन्होंने हमारे अंदर भारत के कायाकल्प की आस्था और आशा को प्रेरित किया। अब, इस संविधान सभा में भाग लेने के दौरान और विभिन्न समितियों से मुझे यह विश्वास हो गया है कि आख़िरकार भारत की प्रतिभा ने ज़रूरत की घड़ी में उनको नहीं छोड़ा है।

27 दिसम्बर 1948 (ईश्वर के नाम में शपथ में) श्री एच.वी. कामथ– ''मैं सदन से अपील करूंगा कि हम एक अमर और एक आध्यात्मिक विरासत के उत्तराधिकारी हैं, एक ऐसी विरासत जो न भौतिक है, न ही लौकिकः एक विरासत जो अध्यात्मिक है, जो शाश्वत है। आइए हम इस अमूल्य विरासत को बर्बाद न करें। आइए हम इस विरासत को नष्ट न करें: आइए हम अपनी प्राचीन विरासत, अपनी आध्यात्मिक प्रतिभा के प्रति सच्चे रहें। आइए हम उस मशाल को हल्के में न लें जो सौंपी गई है आइए हम स्वामी विवेकानन्द के शब्दों में आध्यात्मिक रूप से दुनिया पर विजय पाने की आकांक्षा रखें। आइए हम एक ऐसी राह बनाएं जो तब तक दुनिया की रोशनी बनी रहेगी जब तक सूर्य, चंद्रमा और सितारे बने रहेंगे।''

25 नवंबर 1948 (विश्व में भारत की भूमिका और अंतर्राष्ट्रीय शांति) प्रो. बीएच खारदेकर–''भारत का मिशन शांति का मिशन है। रामतीर्थ और स्वामी विवेकानन्द से लेकर टैगोर और गांधीजी तक, अगर उन्होंने कुछ किया है, तो उसे बहुत मजबूत किया है। पूरे इतिहास में, ऐसा इसलिए नहीं है कि हम कमजोर रहे हैं, बल्कि इसलिए कि यह हमारे खून में रहा है कि हम शांति के इस मिशन को आगे बढ़ा रहे हैं। अहिंसा हर भारतीय की मिट्टी और दिल में है। यह कोई नई बात नहीं है यह हमारे इतिहास, हमारी परंपरा, हमारी संस्कृति के अनुरूप है कि हम शांति का देश हैं और हम यह देखना चाहते हैं कि दुनिया में शांति बनी रहे।'' इसी विचार को 23 नवम्बर 1949 को श्री आर.वी. धुलेकर ने कहा था कि–''स्वामी विवेकानन्द भारत के बाहर तलवार के मिशन के साथ नहीं, बल्कि शांति के मिशन के साथ गए थे।''

29 नवम्बर 1948(अस्पृश्यता निषेध) डॉ. मोनोमोहन दास –''न केवल महात्मा गांधी, बल्कि इस प्राचीन भूमि के अन्य महापुरुषों और दार्शनिकों, स्वामी विवेकानन्द, राजा राम मोहन राय, रवीन्द्रनाथ टैगोर और अन्य जिन्होंने इस (अस्पृश्यता) घृणित प्रथा के खिलाफ अथक संघर्ष किया, उन्हें भी आज यह देखकर बहुत खुशी होगी स्वतंत्र भारत ने, स्वतंत्र भारत ने अंततः भारतीय समाज के शरीर पर इस घातक घाव को दूर कर दिया है। एक हिंदू के रूप में, मैं आत्मा की अमरता में विश्वास करता हूं। इन महापुरुषों की आत्माएं, लेकिन जिनकी भक्ति और जीवन के लिए–लंबे समय से सेवारत भारत वह नहीं होता जो वह आज है, इस समय अस्पृश्यता की इस घृणित प्रथा को दूर करने के हमारे साहस और साहस पर हम पर मुस्कुरा रहा होता।''

5 नवम्बर 1948 (ग्राम पंचायत)श्री एच.वी. कामथ –मुझे नहीं पता कि उन्होंने श्री अरविंद द्वारा लिखित ''द स्पिरिट एंड फॉर्म ऑफ इंडियन पॉलिटी'' की किताब पढ़ी है या नहीं। इन किताबों से हमें पता चलता है कि प्राचीन काल में हमारी राजनीति किस तरह से स्वायत्त और आत्मनिर्भर ग्राम समुदायों पर आधारित थी; और यही कारण है किहमारी सभ्यता इतने युगों से बची हुई है। अगर हम अपनी राजनीति की ताकत को भूल जाते हैं तो हम सब कुछ खो देते हैं।

6 दिसम्बर 1948 (धर्म पर चर्चा) श्री एच.वी. कामथ–इस शब्द धर्म के वास्तविक अर्थ पर आते हुए, मैं दृढ़तापूर्वक कहता हूँ कि धर्म का सबसे व्यापक अर्थ धर्म या उसकी आत्मा के सच्चे मूल्यों से लगाया जाना चाहिए। धर्म, जिसे हमने अपनी संविधान सभा के शिखा या मुहर में अपनाया है और जिसे आप हमारी बहसों की मुद्रित कार्यवाही में पाएंगेः (''धर्म चक्र प्रवर्तनाय'') – श्रीमान, मेरे विचार से, उस भावना को भारतीय संघ के नागरिकों में समाहित किया जाना चाहिए। योग पर चर्चा के समय कामथ ने कहा कि महायोगी श्री अरविंद ने बार–बार कहा है कि आज सबसे बड़ी आवश्यकता चेतना का रूपांतरण, योग के अनुशासन के माध्यम से मानवता का उच्च स्तर तक उत्थान है।

6 दिसम्बर 1948(धर्म– पर चर्चा) पंडित लक्ष्मीकांत मैत्र– ''महान स्वामी विवेकानन्द कहते थे कि भारत अपनी समृद्ध आध्यात्मिक विरासत के कारण पूरी दुनिया में आदर और सम्मान का पात्र है। पश्चिमी दुनिया, भौतिकवादी सभ्यता की सारी ताकत से मजबूत, विज्ञान की उपलब्धियों से समृद्ध, प्रभुत्वशाली स्थिति रखती है विश्व आज आध्यात्मिक खजाने के अभाव के कारण गरीब है। और अब भारत ने इसमें कदम रखा है। भारत को इस समृद्ध आध्यात्मिक खजाने, अपने इस संदेश को पश्चिम से आयात करना होगा। यदि हमें ऐसा करना है, यदि हम हैं दुनिया को शिक्षित करने के लिए, अगर हमें भारत की संस्कृति और विरासत के बारे में दुनिया में व्याप्त संदेह और गलत धारणाओं और भारी अज्ञानता को दूर करना है, तो यह अधिकार अंतर्निहित होना चाहिए, – अपने धार्मिक विश्वास को मानने और प्रचारित करने का अधिकार स्वीकार किया जाना चाहिए।''

19 नवम्बर 1949 (आध्यात्मिक विरासत –तृतीय वाचन) श्री एचवी कामथ–''हम भारत के लोग, अपनी आध्यात्मिक प्रतिभा और अपनी प्राचीन परम्पराओं को नहीं भूलेंगे। यह स्वामी विवेकानन्द ही थे जिन्होंने कहा था कि जिस दिन भारत भगवान को भूल जाता है, उसी दिन वह आध्यात्मिकता को भी भूल जाता है, जिस दिन आध्यात्मिकता मर जाएगी, उस दिन भारतभूमि दुनिया में एक ताकत बनना बंद कर देगी। मुझे आशा है कि हम इस तथ्य के बावजूद अपनी परंपराओं को जीवित रखेंगे कि हम प्रस्तावना में भगवान के नाम का आव्हान करना भूल गए। हम इस संविधान को दैवीय मार्गदर्शन की भावना से, दैवीय कृपा और आशीर्वाद के तहत काम करें। ....स्वामी विवेकानन्द ने भारत को आगे बढ़ने का आव्हान किया और वेदान्त का जाप किया मन्त्रम्–

उत्तिष्ठता जगराता प्राप्य वरानमिबोधता

जागो, उठो और तब तक मत रुको जब तक लक्ष्य प्राप्त न हो जाए''।

17 नवम्बर 1949 (प्रिएम्बल –तृतीय वाचन) सेठ गोविंद दास – इस प्रिएम्बल में हमने स्पष्ट कर दिया है कि न्याय का प्रथम स्थान रहना सर्वथा उचित है। हमारे देश में सदा न्याय को ही प्रथम स्थान प्राप्त रहा है। यदि हम अपने प्राचीन इतिहास को देखें उस इतिहास की परम्परा को देखें तो हमें ज्ञात होगा कि इस देश में न्याय का प्रथम स्थान था। हमारे यहां कहा गया है:स्वस्ति प्रजाभ्यः परिपालयन्तां न्यायेन मार्गेण महीं महीशाः अर्थात् शासक न्याय मार्ग से प्रजा का पालन करें।

–सूर्य प्रताप सिंह राजावत,
अधिवक्ता राजस्थान उच्च न्यायालय जयपुर

तापमान लगातार 4 डिग्री से नीचे, फसलों को नुकसान की आशंका

श्रीगंगानगर। जिले में पिछले एक सप्ताह से मौसम पूरी तरह ड्राई बना हुआ है। सूखी कड़ाके की सवाई माधोपुर सवाई माधोपुर ठ्ठंड के चलते रात का न्यूनतम तापमान लगातार 4 डिग्री सेल्सियस से नीचे दर्ज किया जा रहा है। इससे खेतों में पाला जमने लगा है और रबी फसलों पर संकट मंडराने लगा है। कृषि वैज्ञानिकों का कहना है कि अगर मौसम ऐसे ही ड्राई बना रहा और तापमान में मामूली भी बढ़ोतरी हुई तो सरसों, आलू, गेहूं समेत अन्य रबी फसलों को और ज्यादा नुकसान हो सकता है।

कृषि अनुसंधान केंद्र, श्रीगंगानगर पर शुक्रवार सुबह न्यूनतम तापमान 5.2 डिग्री सेल्सियस रिकॉर्ड किया गया। इससे पहले गुरुवार को न्यूनतम तापमान 3.7 डिग्री और अधिकतम 20.4 डिग्री रहा। वहीं बुधवार को न्यूनतम तापमान 3.5 डिग्री और अधिकतम 16.5 डिग्री दर्ज किया गया था।दिन में भी तापमान अपेक्षाकृत कम रहने से मौसम ड्राई बना हुआ है और सूखी ठ्ठंड लोगों को कंपकंपी छुड़ा रही है। शुक्रवार सुबह करीब 10 बजे तक इलाके में घना कोहरा छाया रहा। कोहरे के चलते विजिबिलिटी काफी कम हो

बनेवड़ा से अजमेर तक जन संघर्ष यात्रा, प्रशासन ने मानी दो मांगें

नसीराबाद,(निसं)। बनेवड़ा गांव व क्षेत्र की समस्याओं को लेकर बनेवड़ा संघर्ष समिति की जन संघर्ष यात्रा 15 जनवरी को ठााम बनेवड़ा के शिव मंदिर से अजमेर जिला कलेक्ट्रेट के लिए रवाना हुई। यात्रा सुबह 9:15 बजे डीजे के साथ शुरू हुई, जिसमें बड़ी संख्या में ठाामीण शामिल रहे। संघर्ष समिति पिछले आठ वर्षों से जनसमस्याओं को लेकर लगातार सक्रिय है। इससे पहले भी समिति ने दो बार जयपुर तक साइकिल यात्रा निकालकर समस्याएं प्रशासन तक पहुंचाई थीं। यात्रा के दौरान नसीराबाद सदर व नसीराबाद शहर पुलिस जाप्ता सुरक्षा व्यवस्था में साथ रहा और बलवंता सीमा तक यात्रा को रवाना किया गया।

यात्रा से पहले ही ठााम पंचायत प्रशासन ने समिति की दो मांगों–ब्लॉक रोड निर्माण और आंगनबाड़ी कलर पुलिया निर्माण–पर काम शुरू कर दिया। इसके लिए पाइप मंगवाकर निर्माण कार्य प्रारंभ किया गया, जिससे ठाामीणों में संतोष देखा गया।

यात्रा का रास्ते में कई स्थानों पर स्वागत किया गया। रामदेवजी मंदिर बाघसुरी, अखरिया, नांदला, नसीराबाद, प्रेस क्लब नसीराबाद, शिवसेना नसीराबाद और राजपूत समाज नसीराबाद के लोगों ने यात्रा का अभिनंदन किया।

अजमेर पहुंचने से पहले यात्रा ने गांधी भवन में महात्मा गांधी, डॉ. भीमराव अंबेडकर और ज्योतिबा फुले की प्रतिमाओं पर माल्यार्पण किया। इसके बाद जिला कलेक्ट्रेट पहुंचकर संघर्ष समिति ने जिला कलेक्टर को ज्ञापन सौंपा और मांगों पर शीघ्र कार्रवाई की मांग की।

समिति ने कहा कि यदि समस्याओं का समाधान नहीं हुआ तो आंदोलन आगे भी जारी रहेगा। इस दौरान समिति के कई सदस्य व ठाामीण मौजूद रहे।

ज्योतिराव फूले की प्रतिमा लगाने का दिया ज्ञापन

मसूदा, (निसं)। शुक्रवार नगरपालिका मसूदा में समस्त माली समाज ने सूरज पोल गेट चौराहा पे महान समाज सुधारक शिक्षाविद महिला अधिकारो के प्रणेता ज्योतिराव फूले जी का प्रतिमा लगाने हेतु मसूदा नगरपालिका के अधिशासी अधिकारी व मसूदा उपखण्ड अधिकारी दीपशिखा कालवी को ज्ञापन सोपा है।

जिसमे माली समाज के सभी प्रबुद्धजनों ने ज्ञापन में बताया है कि मसूदा के सूरज पोल गेट पर प्रतिमा लगाने हेतु पूर्व में मसूदा विधायक को भी मसूदा के सभी समाज के लोगो ने अनुरोध किया है। उपखण्ड अधिकारी को ज्ञापन में बताया है कि बहु संख्यक समाज की भावनाओं को महत्व देते हुए जल्द से जल्द यहा प्रतिमा लगवाने की मांग की। सेवानिवृत्त सैनिकों के उज्ज्वल भविष्य की दिशा में नया कदम ब्यावर में सीएमए –सीएटी प्रमाणपत्र पाठ्यक्रम प्रारंभ ब्यावर (निसं) देश की तीनों सशस्त्र सेनाओं– थल सेना, नौसेना एवं वायु सेना से सेवानिवृत्त शीघ्र सेवानिवृत्त होने वाले सैनिकों के लिए इंस्टिट्यूट ऑफ कास्ट अकाउंटेंटस ऑफ इंडिया के द्वारा सर्टिफिकेट इन अकाउंटिंग टेक्नीशियन पाठ्यक्रम प्रारंभ किया गया है। यह पाठ्यक्रम सेवानिवृत्त सैनिकों के भविष्य को सशक्त एवं सुरक्षित बनाने की दिशा में एक महत्वपूर्ण पहल है।

इस अवसर पर सूर्यमहल होटल में ब्यावर चेप्टर द्वारा इस कोर्स का शुभारंभ किया गया। चेयरमैन अंकुर सिंहल ने बताया कि ब्यावर शहर में नृसिंह अठासेन जैन विधापीठ में इस बैच की कक्षाएं चलाई जा रही हैं।

आज एयरफोर्स में कैप्टन प्रियांशु शर्मा, सीएमए के सेंट्रल काउंसिल सदस्य एवं केट कोर्स कमिटी के चेयरमैन राजेंद्र सिंह भाटी, जॉइंट डायरेक्टर राजेश जैन की उपस्थिति में इस कोर्स का शुभारंभ किया गया।कैप्टन प्रियांश शर्मा ने रक्षा विभाग द्वारा सीएमए इंस्टीट्यूट के साथ बनाये गए कैट कोर्स से सभी अभ्यर्थियों को अवगत करवाया। राजेंद्र सिंह भाटी ने सभी अभ्यर्थियों को रिटायरमेंट के बाद फाइनेंस एवं अकाउंट सेक्टर में अपना भविष्य बनाने की सोच रहे अभ्यर्थियों को इस कोर्स की महत्वत्ता को बताया। राजेश जैन ने इस कोर्स के बाद प्लेसमेंट की योजनाओं पर प्रकाश डाला।ब्यावर शहर के सीएमए चैप्टर में अब तक 45 सैनिकों का पंजीकरण हो चुका है। यह एक नियमित पाठ्यक्रम होगा, जिसकी अवधि चार माह रहेगी। पाठ्यक्रम पूर्ण करने के उपरांत सेवानिवृत्त सैनिक बैंक, निजी संस्थानों में लेखाकार के रूप में कार्य कर सकेंगे। इच्छुक अभ्यर्थी स्वयं का स्वतंत्र प्रैक्टिस भी प्रारंभ कर सकते हैं।इस पाठ्यक्रम में केवल सेना से संबंधित कार्मिकों को ही प्रवेश दिया जाएगा। यह प्रशिक्षण कार्यक्रम द इंस्टीट्यूट ऑफ कॉस्ट अकाउंटेंट्स ऑफ इंडिया के विभिन्न चैप्टरों के माध्यम से, रक्षा मंत्रालय के साथ किए गए समझौता ज्ञापन के अंतर्गत देश के विभिन्न शहरों में संचालित किया जा रहा है।इस संबंध में जानकारी देते हुए रुपेश कोठारी ने बताया कि यह पहल सेवानिवृत्त सैनिकों को व्यावसायिक कौशल प्रदान कर उन्हें आत्मनिर्भर बनाने में सहायक सिद्ध होगी।मंच का संचालन ज्योति माहेश्वरी ने किया।इस अवसर पर ब्यावर से सीएमए फाउंडेशन कोर्स में रेंक लाने वाले विद्यार्थियों का स्वागत भी किया गया। इस अवसर पर चेयरमैन अंकुर सिंहल, सचिव शुभम सांखला, वाइस चेयरमैन कमलेश सांखला, पूर्व चेयरमैन मितेश चौपड़ा, चिन्मय माहेश्वरी आदि उपस्थित रहे।

राशिफल

पंडित अनिल शर्मा

शनिवार 17 जनवरी, 2026

माघ मास, कृष्ण पक्ष, चतुरदशी तिथि, शनिवार, विक्रम संवत 2082, मूल नक्षत्र प्रातः 8:12 तक, व्याघात योग रात्रि 9:18 तक, विष्टि करण दिन 11:13 तक, चन्द्रमा आज धनु राशि में संचार करेगा।

गृह स्थितिः सूर्य–मकर, चन्द्रमा–धनु, मंगल–मकर, बुध–धनु, गुरू–मिथुन, शुक्र–मकर, शनि–मीन, राहु–कुम्भ, केतु–सिंह

आज भद्रा दिन 11:13 तक है। बुध मकर में दिन 10:23 से प्रवेश करेगा। आज रटंती कालिका पूजन है और शब्बे मिराज (मु.) है।

श्रेष्ठ चौघड़ियाः शुभ 8:40 से 9:59 तक, चर 12:37 से 1:56 तक, लाभ–अमृत 1:56 से 4:33 तक।

राहूकालः 9:00 से 10:30 तक। सूर्योदय 7:21, सूर्यास्त 5:52

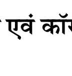

मेष

परिवार में शुभ–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। धार्मिक स्थान की यात्रा संभव है। नवीन कार्यों के संबंध में सकारात्मक आश्वासन प्राप्त होंगे।

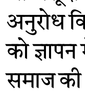

वृष

चन्द्रमा अष्टम भाव में शुभ नहीं है। शुभ–मांगलिक कार्यों में व्यवधान हो सकता है। मित्रों/रिश्तेदारों से विवाद हो सकते हैं। यात्रा में दुर्घटना का भय है।

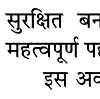

मिथुन

परिवार में धार्मिक–मांगलिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा। परिवार में आपसी सहयोग–समन्वय बना रहेगा। व्यावसायिक कार्यों में व्यस्तता बनी रहेगी।

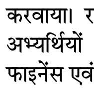

कर्क

स्वास्थ्य ठीक रहेगा। व्यक्तिगत परेशानियां दूर होने लगेगी। विवादित मामलों से राहत मिल सकती है। अस्त–व्यस्त दिनचर्या में सुधार होगा। व्यावसायिक संपर्क बनेंगे।

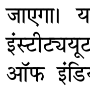

सिंह

आवश्यक और महत्वपूर्ण कार्यों के संबंध में दुविधा बनी रहेगी। परिजनों के व्यवहार के कारण दुःख हो सकता है। व्यावसायिक कार्यों के संबंध में शुभ संदेश प्राप्त होंगे।

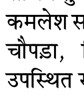

कन्या

घर–परिवार में सुख–सुविधाएं बढ़ेगी। परिवार में महत्वपूर्ण कार्य सम्पन्न हो सकते हैं। परिवार में अतिथियों का आगमन बना रहेगा।

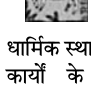

तुला

व्यावसायिक प्रयासों में उचित सफलता मिलेगी। व्यावसायिक वार्ता सफल रहेगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। परिवार में सुख–शांति बनी रहेगी।

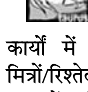

वृश्चिक

आर्थिक कारणों से अटके हुए कार्य बनने लगेंगे। आय में वृद्धि होगी। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा।

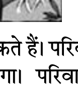

धनु

व्यावसायिक कार्यों से संबंधित आर्थिक समस्या का समाधान हो सकता है। संभावित धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। परिवार में उत्सव जैसा माहौल रहेगा।

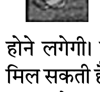

मकर

घर–गृहस्थी के खर्चों में अनावश्यक वृद्धि हो सकती है। समय अनर्गल कार्यों में खराब हो सकता है। मन में असंतोष बना रहेगा। स्वभाव की तेजी पर नियंत्रण रखें।

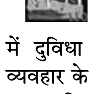

कुंभ

आर्थिक/वित्तीय मामलों के लिए दिन अच्छा रहेगा। आय में वृद्धि होगी। संभावित स्त्रोत से धन प्राप्त होगा। व्यावसायिक यात्रा सफल रहेगी।

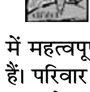

मीन

व्यावसायिक कार्यों के लिए दिन अच्छा रहेगा। व्यावसायिक कार्य शीघ्रता/सुगमता से बनने लगेंगे। चलते कार्यों में प्रगति होगी। आर्थिक स्थिति ठीक रहेगी। धार्मिक कार्य सम्पन्न हो सकते हैं।